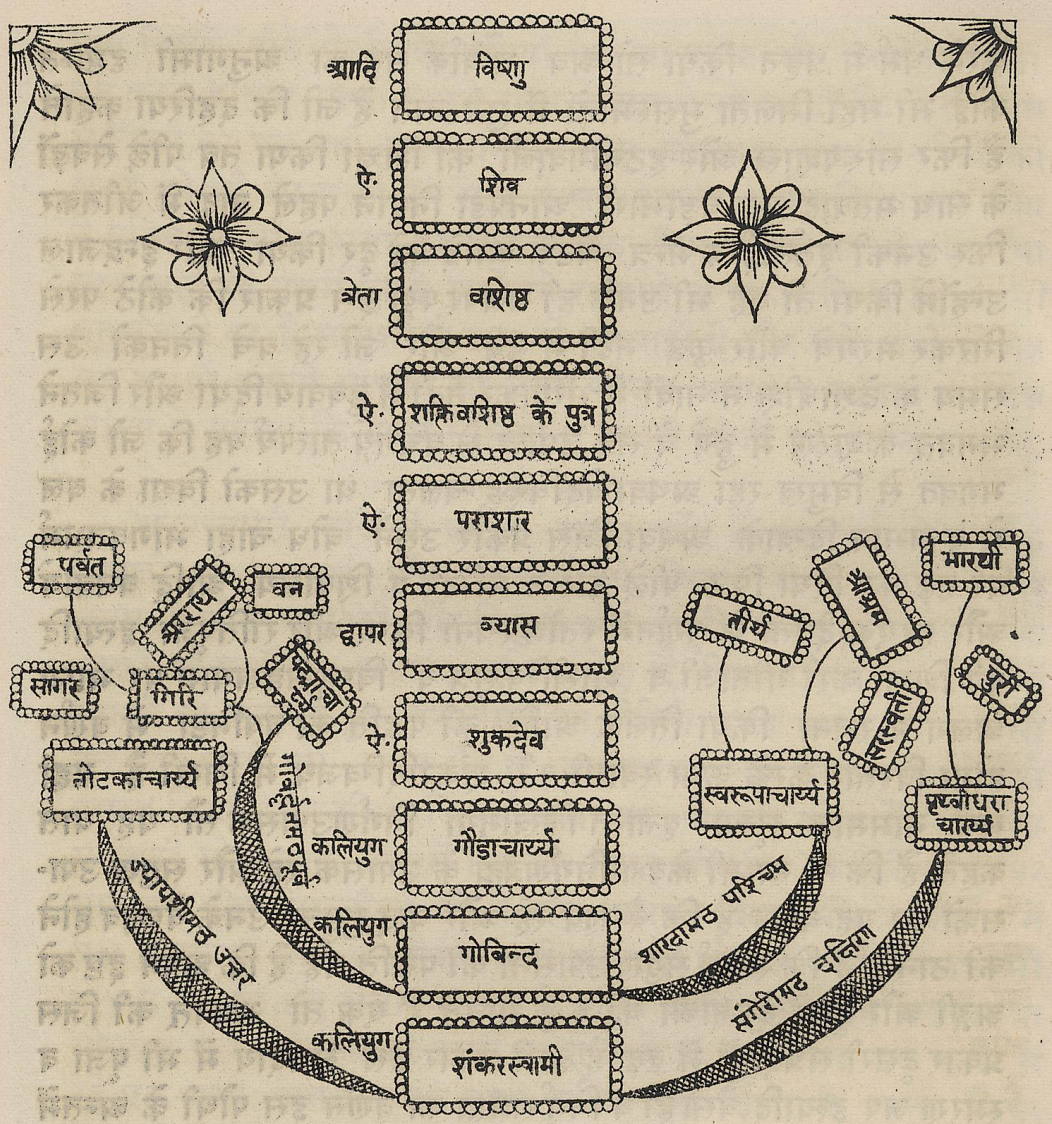

निष्ठा तीसरी।

साधुसेवा व सत्संग जिसमें तीस भक्तों की कथा है।

श्रीकृष्णस्वामी के चरणकमल की अम्बर रेखा को और वाराह अवतार को दण्डवत् है कि निजधाम ब्रह्मपुरी में वह अवतार धारण करके पृथ्वी को समुद्र से निकाला और हिरण्याक्ष को वध किया व सब शास्त्रों का सिद्धान्त है इस जीवको आवागमन के बन्धनसे छूटने के हेतु सत्संग व्यतिरेक और कुछ साधन नहीं जिसके प्रभाव से शीघ्र भगवत्

UNIVERSITÄTS-BIBLIOTHEK HEIDELBERG
http://digi.ub.uni-heidelberg.de/diglit/nabhadasa1900/0079
© Universitätsbibliothek Heidelberg
gefördert durch die DFG